वृत्तपत्राचे नांव :– नवभारत टाईम्स्
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– मुंबई
वृत्तपत्र पान क्र :– 4
दिनांक :–11/01/2006

वेदों के प्रखर व्याख्याता थे ब्रह्मलीन स्वामी गंगेश्वरानंद

मुम्बई, (न.प्र.)। 'वेदों की सरल व्याख्या को ब्रह्मलीन स्वामी गंगेश्वरानंद ने पूरे विश्व में उनका महत्व बता कर प्रतिष्ठापित किया। साथ ही एक सौ ग्यारह वर्ष की दीर्घायु प्राप्त कर भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया।' स्वामी भास्करानंद ने यह उदगार स्वामी गंगेश्वरानंद जी की 125 वीं जयंती के उपलक्ष्य में गुरु गंगेश्वर हाल डी. रोड चर्चगेट में व्यक्त किये।

सत्संग

स्वामी जी ने बताया कि आज से 125 वर्ष पूर्व पंजाब प्रांत (अब पाकिस्तान) के एक गांव में पंडित रामदत्त के यहां बालक चंद्रशेखर ने जन्म लिया। बचपन से ही बालक में अद्भुत जिज्ञासाएं देख एक बार पंडित रामदत्त ने स्वामी रामानंद को अपने घर पर यज्ञोपवीत संस्कार के समय बुलाया। स्वामी रामानंद ने बालक चंद्रशेखर को द्वादश अक्षर मंत्र दिया जिसका वह जाप करता साथ ही पिता के द्वारा घर में ही सुनायी गयीं भगवान की लीलाओं की कथाओं ने चंद्रशेखर के जीवन की धारा ही मोड़ दी। बचपन में ही चेचक के कारण आंखों की ज्योति चली गयी, लेकिन अध्यात्म के प्रति उनकी जिज्ञासा बढ़ने लगी। स्वामी रामानंद जी आये और अपने साथ ले गये। हरिद्वार के कुंभ में दीक्षा देकर स्वामी गंगेश्वरानंद नाम दे दिया। साथ ही विद्याध्ययन के लिए वाराणसी भी भेज दिया। करीब पच्चीस वर्ष तक विद्याध्यन कर स्वामी गंगेश्वरानंद ने भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया।

अपने ज्ञानचक्षुओं से उन्होंने वेदों पर करीब सौ पुस्तकें लिखीं। विश्व के सौ से अधिक देशों की यात्रा कर वेद मंदिर और वेद शोध संस्थानों की प्रतिष्ठा की। देश में अनेक संस्कृत कॉलेज और औषधालयों के अलावा स्कूल-कालेज भी खुलवाये। स्वामी जी के अनुयायी देश ही नहीं विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हैं। इन्हीं कार्यों को उनके शिष्य महामंडलेश्वर स्वामी गोविंदानंद जी आगे बढ़ा रहे हैं।